P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-10* June- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में चित्रित नारी–जीवन

Woman-Life Portrayed In The Novels of Yadvendra Sharma 'Chandra'

Paper Submission: 04/07/2021, Date of Acceptance: 15/07/2021, Date of Publication: 24/07/2021

शैलेन्द्र गौड़
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
ओ.पी.जे.एस विश्वविद्यालय,
चुरू, राजस्थान, भारत

नवनीता भाटिया
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
ओ.पी.जे.एस विश्वविद्यालय,
चुरू, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय समाज में प्राचीन काल से नारी का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है किंतु भारतीय नारी के जीवन में समय–समय पर परिवर्तन हुआ है। आधुनिक युग में नारी को अपना एक अलग व्यक्तित्व अवश्य प्राप्त हुआ फिर भी उसे इस व्यक्तित्व निर्माण के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी जीवन के अध्ययन के उपरांत नारी जीवन विषयक विविध तथ्य सामने आते हैं। उनके उपन्यासों में नारी का सामाजिक जीवन असुरक्षित दिखायी देता है। नारी का दांपत्य जीवन भी उतना सुखमय दृष्टिगोचर नहीं होता। नारी का आर्थिक जीवन समस्याओं से ग्रस्त दिखायी देता है। गरीबी, धन का अभाव और अर्थार्जन के सीमित साधन आदि ने नारी जीवन को काफी प्रभावित किया है। 'चन्द्र' के उपन्यासों में नारी राजाओं, सामंतों और ठाकुरों के लिए राजनीति की एक वस्तु रही है। चन्द्र नारी मन के चितेरे हैं। उनके अधिकांश उपन्यास नारी जीवन पर आधारित हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी मनोदशा, व्यथा, मनोवृत्ति, आकांक्षा, अतृप्ति, दुःख, पीड़ा, प्रेम, निराशा, मानसिक द्वंद्व को प्रस्तुत किया है।

The place of women in Indian society has been important since ancient times, but the life of Indian woman has changed from time to time. In the modern era, a woman must have got a different personality of her own, yet she has to struggle a lot for the formation of this personality. After studying the female life reflected in the novels of Yadvendra Sharma 'Chandra', various facts about female life come to the fore. The social life of women is seen in her novels. The married life of a woman is also not that happy. The economic life of a woman appears to be plagued with problems. Poverty, lack of money and limited means of earning, etc. have greatly affected women's life. In the novels of 'Chandra', women have been an object of politics for the kings, feudatories and Thakurs. Moon is the bird of female mind. Most of her novels are based on women's life. In her novels, she has presented female mood, sorrow, attitude, aspiration, dissatisfaction, sorrow, pain, love, despair, mental conflict.

मुख्य शब्द : नारी, सामाजिक, राजनीतिक, सामंती, दाम्पत्य, आर्थिक, धार्मिक जीवन।
Feminine, Social, Political, Feudal, Marital, Economic, religious life.

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में नारी को देवी एवं आदिशक्ति के रूप में पूजा गया है। सरस्वती और लक्ष्मी विद्या और धन के आदर्श माने गये। नारी की महत्ता बताते हुए डॉ. वल्लभदास तिवारी लिखते हैं कि "नारी शक्ति स्वरूपिणी, पुरुष और पौरूष की जननी तथा कोमलता, स्नेह, ममता, सौंदर्य एवं आनंद का आगार है। उसमें कार्यशक्ति और ज्ञान–शक्ति, शासन शक्ति और संरक्षण शक्ति, उत्पादिनी शक्ति एवं संघटिनी शक्ति सभी कुछ विद्यमान है।"[1] इससे स्पष्ट है कि दांपत्य जीवन के दो पहिए स्त्री व पुरुष है, स्त्री हमेशा प्रेरणादायिनी होने के कारण उसमें सर्जन और पालन की शक्ति निहित है।

विश्व की किसी भी समाजव्यवस्था में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। भारतीय जीवन में नारी का स्थान वैदिक काल से वर्तमान काल तक परिवर्तित रहा है। ''भारतीय संस्कृति में नारी की महत्ता को गृहस्थाश्रम का मूल

आधार माना गया है। इसी कारण भारतीय समाज में नारी एक विशिष्ट गौरवपूर्ण स्थान पर प्रतिष्ठित है। पुरुष से भी ज्यादा नारी मर्यादा को उत्कृष्ट माना गया है।''[2] नारी परिवार तथा समाज दोनों के विकास में अपना पूर्णतः योगदान देती है। भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान एकाकी है, उत्तम है। वह स्नेह, ममता, प्रेम का प्रतीक है और मानव जीवन का रस है, अमृत है, प्राण है। मगर कुछ मात्रा में भारतीय जीवन में नारी का भोग्या रूप भी हमें दिखायी देता है। इसी कारण नारी का जीवन शोषित रहा है। वैसे तो नारी से ही परिवार बनता है, मनुष्य का उगमस्थान नारी को ही माना जाता है। नारी से ही घर की शोभा बढ़ती है। नारी ही मनुष्य का पालन करती है, उसका विकास करती है। वह शिक्षित हो या अनपढ़ अपने परिवार तथा समाज को आदर्श बनाने में अपना तन–मन समर्पित कर देती है। इसी कारण नारी को आदरणीय माना जाता है। नारी को सभ्यता और संस्कृति का तीक माना जाता है। पुरुष के हर कार्य में स्त्री अपना सहयोग देती है, सहकार्य करती है, इसीलिए नारी को प्रेरणास्रोत भी कहा जाता है। हर क्षेत्र में नारी पुरुष को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरित करती है।

प्राचीन कालीन नारी जीवन और आधुनिक कालीन नारी जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन हमें दिखायी देता है। इसे स्पष्ट करते हुए डॉ. रेवा कुलकर्णी लिखती हैं कि "समाज में उसको कभी देवता के उदात्त स्थान पर विभूषित किया गया था, तो कभी उसके साथ दासी जैसा व्यवहार किया गया था तो कभी उसका मूल्य मन–बहलाव के खिलौने से अधिक नहीं माना गया।"[3] किसी भी समाज की श्रेष्ठता उस समाज में निहित नारी की स्थिति पर निर्भर रहती है। अतः नारी समाज की उन्नति और अवनति का द्योतक मानी जाती है। आधुनिक काल में नारी जीवन में आए परिवर्तन को देखते हुए हम कह सकते हैं कि आज की नारी अपने अस्तित्व एवं अधिकारों के प्रति अधिक सजग दिखायी देती है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत शोध कार्य में पूर्व में किये गये कुछ मुख्य शोध प्रस्तुत किये गये है जो निम्नलिखित हैः–

चव्हाण, डॉ. गजानन सुखदेव ने अपनी पुस्तक ''यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यास – सामंती जीवन का दस्तावेज'' (सन् 2016) में लेखक के सम्पूर्ण साहित्य में सामंती जीवन का दस्तावेज दर्शाया गया है। जिसमें साहित्य को अनेकानेक अविस्मरणीय एवं मौलिक रचनाएँ दिए है। उन्होंने आजादी के पूर्व और पश्चात् के भारतीय समाज तथा जनजीवन को राजस्थान के संवेदनात्मक रूप से चित्रित किया है एवं हिंदी और राजस्थानी साहित्य में अधिकारपूर्ण लिखने में प्रमुख रहे है। उनके उपन्यासों में सामंती वर्ग की भोगपरक वृत्ति, उच्च वर्ग की ऐश्वर्य सम्पन्न स्थिति, मनोरंजन के साधन, अंधश्रद्धा, रूढियाँ, सामाजजिक कुरीतियों का बढ़ावा देना आदि प्रवृत्तियों का यथार्थ रूप से चित्रण प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में सामंती जीवन के बदलते सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक परिवेश का चित्रण मार्मिक ढंग से किया है। इसी के साथ आर्थिक शोषण, अत्याचार, वर्ग भेद, नैतिक मूल्यों का संकट, व्यक्तित्व विकास में अवरोध, जातीय एवं सामाजिक समस्याएँ, नारी की दयनीय स्थिति आदि समस्याओं को प्रतिपादित किया है। इसके साथ ही रूढ़ि–विरोध, धर्म और समाज का यथार्थ चित्रण, जातिवाद की अस्वीकृति, अर्थ प्रधान सामंती समाज का विरोध, क्रांतिगत चेतना का उदय आदि तथ्यों पर प्रकाश डाला है।

राठौड़, डॉ. सुरेश सिंह ने अपनी पुस्तक ''यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में सामंतवाद एवं नारी'' (सन् 2015) में लेखक ने स्त्रियों व दलितों पर सामंतों के होने वाले अत्याचारों को अपनी धारदार लेखनी के माध्यम से प्रबुद्ध समाज के सामने प्रस्तुत किया है। इनके लेखन में सामाजिक समस्याओं का निरूपण, युग चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति समकालीन जीवन का स्पन्दन और लोक–जीवन का जीवंत रूप सहज ही देखा जा सकता है। चन्द्र ने अपने लेखन में न केवल अपनी जागरूक जीवन दृष्टि का परिचय दिया है, अपितु अपने रचना कौशल के द्वारा युगीन संदर्भो में सामंती शोषण की लोमहर्षक यातनाओं को भी चित्रित किया है। सामंती परिवेश का जितना व्यापक, विस्तृत एवं प्रामाणिक चित्रण चन्द्र जी किया है, उतना समग्र भारतीय साहित्य में शायद ही किसी ने किया हो। उनके उपन्यासों से गुजरते हुए आप सामंती जीवन की विलासित षड्यंत्र, क्रूरता, शोषण, अत्याचार, दलित और नारी की मर्मान्तक पीड़ा से सराबोर ही नही हो जाएगें बल्कि उस व्यवस्था के प्रति विद्रोही–चेतना स्थाई रूप से आपके अन्दर घर कर जाएगी। यही उनके उपन्यासों की सफलता एवं सार्थकता है।

बेणचेकर, गीता मा. ने अपनी पुस्तक ''यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र' व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' (सन् 2012) में लेखिका ने चन्द्र जी के सशक्त व्यक्तित्व एवं उनके द्वारा रचित विभिन्न कृत्यों को दर्शाया गया है। पुस्तक में साहित्य मानव जगत् का सजीव चित्रण करने वाली वह सशक्त कला है जो मानव स्वप्नों और कल्पनाओं को भी रूप प्रदान करती है। इसी साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है उपन्यास। आधुनिक युग में उपन्यास का विकास तीव्रगति से हो रहा है। व्यक्तित्व की गरिमा उसके अन्तर्मुखी साधना और उसके प्रयत्नों की उपलब्धियों से आँकी जाती है। यही वह कसौटी है जिस पर घिसा जाकर व्यक्तित्व रूपी स्वर्ण की शुद्धता एवं उक्तष्टता की सच्ची परख होती है। एक ऐसे व्यक्ति की जो साहित्य के लिए पूर्णतः समर्पित होकर जीवन भर निरन्तर प्रतिकूलता, अभावों की आंधी तथा विरोधी के थपेड़ों को झेलते प्रचण्ड साधना की आग में तपता हुआ, क्षमतावान समन्वय साधक, निर्भीक लेखक, क्रान्तिकारी विचारक, सहज, सरल और आस्थावान बना रहा, उसी व्यक्तित्व का नाम है– यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र'।

मालती, डॉ. के.एम. ने अपनी पुस्तक ''स्त्री विमर्श : भारतीय परिप्रेक्ष्य'' (सन् 2010) में भारतीय

नारीवाद भारत की प्रबुद्ध नारियों और विचारकों के चिन्तन की उपज है जिसका प्रमुख ध्येय सामन्ती व्यवस्था द्वारा स्थापित गुलामी से स्त्री को मुक्त करना है। इसमें एक ओर पुरुषवर्चस्व एवं मनुवाद का विरोध है, दूसरी ओर भारतीय जीवन–मूल्यों की नवीन सन्दर्भो में पुनर्व्याख्या एवं पुनःस्थापन का प्रयास भी है। स्त्री के अधिकारों के लिए एवं स्त्री–सशक्तीकरण के लिए जो आन्दोलन चल रहे हैं उनसे भारतीय नारीवाद प्रेरणा ग्रहण करता है। इसमें स्त्री विमर्श के भारतीय परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डालते हुए स्त्री के संघर्ष में भारत के महिला कथाकारों के समान्तर चिन्तन पर प्रकाश डाला गया है। भारतीय स्त्री विमर्श का स्वरूप भारतीय साहित्य की लेखिकाओं में बौद्धकाल से लेकर समकालीन युग तक अनवरत रूप से प्राप्त होता है। भक्ति आन्दोलन, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन, आधुनिक भारतीय नवजागरण एवं समकालीन स्त्री मुक्ति आन्दोलन का इसमें विशेष योगदान रहा है। इस पुस्तक में भारतीय नारीवाद को रूपायित करने में इन सब आन्दोलनों, विचारधाराओं और महिला रचनाकारों के योगदान का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया है।

राय, गोपाल ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास' (सन् 2010) में 20वीं शताब्दी के अन्त के साथ हिन्दी उपन्यास की उम्र लगभग 130 वर्ष की हो चुकी है। बड़े ही बेमालूम ढंग से 1870 ई. में पं. गौरीदत्त की देवरानी जेठानी की कहानी के रूप में इसका जन्म हुआ, जिसकी तरफ लगभग सौ वर्षो तक किसी का ध्यान भी नहीं गया। इस दृष्टि से सौभाग्यशाली लाला श्रीनिवास दास का परीक्षागुरु (1882) रहा जिसे हिन्दी का प्रथम उपन्यास होने का गौरव प्राप्त हो गया और आज भी इस लकीर को पीटने वालों की कोई कमी नहीं है। प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने पुष्ट तर्कों के आधार पर देवरानी जेठानी की कहानी को हिन्दी के प्रथम उपन्यास के रूप में स्वीकार किया है और 1870 ई. से 2000 ई. तक की अवधि में हिन्दी उपन्यास के ऐतिहासिक विकास को समझने का प्रयास किया है।

उपलब्ध साहित्य की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि सम्पूर्ण भारतीय समाज में नारी जीवोत्थान की दृष्टि से हिंदी उपन्यासों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। चन्द्र जी ने अपने उपन्यासों में सदा से ही नारी के बारे में लिखा है जो सदैव स्मरणीय रहेगा।

शोध कार्य के उद्देश्य

1. यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र' जी के नारी विषयक उपन्यासों में वर्णित सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के बारे में अध्ययन करना।
2. यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र' की उपन्यासों का अध्ययन करने से समाज में व्याप्त बुराईयों व सामंती परिवेश से परिचित हो पाएगें।

नारी के विभिन्न रूपों के आधार पर चन्द्र जी के उपन्यासों में नारी जीवन को स्पष्ट किया गया है। जो इस प्रकार है :–

नारी का सामाजिक जीवन

चन्द्र के नारी चित्रित उपन्यासों में नारी का सामाजिक जीवन यथार्थ रूप में परिलक्षित होता है। नारी समाज का एक ऐसा महत्वपूर्ण अंग है, जिसके आधार पर प्राचीन काल से हमारी भारतीय सभ्यता व संस्कृति के नियामक तत्व टिके हुए हैं। अपितु समय–समय पर नारी के विभिन्न रूप समाज के समक्ष प्रस्तुत हुए हैं, कहीं पर नारी को देवी बनाकर पूजा गया है तो कहीं पर नारी को हेय दृष्टि से देखा गया है। वह पुरुषों के मन बहलाव का ऐसा खिलौना थी जिसे काम होने पर फेंक दिया जाता है। उसके सुख–दुःखों में किसी को भी सहानुभूति नहीं थी। अनेक सामाजिक कुप्रथाओं का बंधन उसी पर था। इस संबंध में यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' नारी–संदर्भ में स्वयं कहते है कि ''प्रेम और सुन्दरता की मूरत स्त्री है, यह बात मेरे मन में कभी नहीं जाती। मुझे अपने जीवन में जो अनुभव हुए, उनसे मैंने यह जाना। हमारा जो पुरूष प्रधान समाज है, उसमें स्त्री का भयंकर शोषण हुआ है पर स्त्री को जीता नहीं जा सकता, ना ही जीता जा सकेगा। वह कमजोर होकर भी मर्द से कहीं ज्यादा शक्तिशाली है।''[4]
'गुनाहों की देवी' उपन्यास में नारी के वेश्या स्वरूप का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत किया गया है। नारी की विवश मनोदशा, परिस्थितिजन्य पीड़ाओं का भोगता संसार अनुभूति की प्रामाणिकता लिए हुए अभिव्यक्ति पाता है, वही पर चकलों (वेश्याओं की कोठी) में जीवनयापन करने वाली नारी के भविष्य एवं वर्तमान जीवन की दशा तथा दिशा के बारे में भी सोचने को विवश करता है। 'दर्द का दायरा' उपन्यास की वासुकी सामाजिक भय के कारण अपने पति का अन्याय सहती है। उसका प्रेमी शिव एक बार उसे कहता है कि "तुम महासती, महादेवी, सावित्री, सीता, अनुसुइया, सुकन्या न जाने क्या–क्या हो। किन्तु इन श्रेष्ठ विशेषणों के पीछे छिपे समाज और धर्म के भुलावे को जब तुम समझोगी, तब तुम्हें मेरे अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगेगा...।"[5] 'दुःख अपने–अपने' उपन्यास की नायिका मोना परिवार के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग करके एक आदर्श प्रस्तुत करती है। वह परिवार के लिए हर समझौता करने को तैयार हो जाती है। उसकी माँ एक बार कहती है, "क्राइस्ट बेटा, मोनी हमारी बेटी नहीं बेटा है। भगवान इसे चिरायु रखें।"[6] अर्थात् नारी समाज में पराधीन नहीं यह भी बात बतायी गयी है। 'जीवनयुद्ध' उपन्यास बंगाल की भावभूमि पर लिखा गया उपन्यास है, जिसमें नारी जीवन को कैसी–कैसी ठोकरें खानी पड़ती है यह बताया है। विपरीत परिस्थितियों की विचित्र मार जीवन में विसंगतियाँ पैदा कर देती हैं। महुआ और बाबला का चरित्र–चित्रण इस उपन्यास के माध्यम से यह उद्घोषणा करता है कि पृथ्वी पर स्त्री–पुरुष का शरीर ही सर्वोपरि है।[7]

नारी का राजनीतिक जीवन

साहित्य में राजनीति और नारी का घनिष्ठ संबंध है। वर्तमान युग में राजनीति के सर्वव्यापी रूप से कोई भी अछूता नहीं रह सकता। आधुनिक युग में राजनीति समाज

का महत्त्वपूर्ण अंग है। समाज के निर्माण में, व्यक्ति के उत्थान–पतन में इसका विशिष्ट योगदान होता है। वस्तुतः प्रत्येक मनुष्य का राजनीति से कुछ–न–कुछ संबंध होता ही है। चाहे वह राजनेता, अधिकारी, व्यापारी, श्रमिक आदि कुछ भी हो, कहीं–न–कहीं वह राजनीति से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित अवश्य होता है। नारी भी इस राजनीति से अछूती नहीं रही है।

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने नारी चित्रित उपन्यासों में नारी के राजनीतिक जीवन को परिभाषित किया है। उनके तो अधिकांश उपन्यास नारी को केंद्र में रखकर ही लिखे गये हैं। परंतु उनके अधिकांश उपन्यासों का परिवेश सामंती युग रहा है। 'चन्द्र' के उपन्यासों में नारी राजाओं, सामंतों और ठाकुरों के लिए राजनीति की एक वस्तु रही है। 'दीया जला : दीया बुझा' उपन्यास में "जिस गाँव का ठाकुर जसवंत सिंह था, उसके पाँचवी पीढ़ी के पूर्व जुगलसिंह जी ने अपने नरेश को अपने ग्राम की एक अत्यंत सुकुमार कन्या नजराने में भेंट की थी जिसके कारण उस स्वामी भक्त राजपूत को यह गांव पुरस्कार स्वरूप मिला था। तब नरेश का दरोगा जुगलसिंह अपने ग्राम की अपनी ही बहन को उस नरेश को भेंट करके छोटी–सी ढाँणी का ठाकुर बन गया। इसकी पाँचवी पीढ़ी का ठाकुर था प्रतापसिंह।"[8] इस प्रकार उस युग में नारी को लेन–देन की वस्तु समझा जाता था जिससे सामंत अपने राजनैतिक हित पूरे करते थे। 'खून का टीका' उपन्यास में राजा मालदेव हम्मीर को मारने के लिए अपनी पुत्री को मोहरा बनाता है। वह अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव रख एक षड्यंत्र रचाता है। इस संबंध में मौजीराम के शब्दों में "राजा मालदेव राणा जी को विवाह के बहाने जालौर बुला कर मारना चाहते थे।"[9] 'रनिवास की रूपसी' उपन्यास के हुलास के सामने भी पारस कंवर के बारे में ऐसी ही राय रखते थे। इस बात का पारस कंवर को अहसास था। वह हुलास से कहती है कि "यहाँ बड़े–बड़े लोगों की राय है कि यह आवरण थोड़े ही बदल जाते हैं, बाजार की औरत मंदिर की देवी तो नहीं बन सकती। यह मुसलमान है इसलिए उसे हिंदुओं से नफरत है।"[10]

सामंतवादी युग में सामान्य नारी भी उनकी राजनीति से अछूती नहीं थी। राजाओं के दरबार की शोभा बढ़ाने के लिए समाज की सुंदर नारियों को राजाओं के समक्ष पेश किया जाता था और उनका देह शोषण किया जाता था। जैसे 'जनानी ड्योढी' की नैनरस और 'ढोलन कुंजकली' की कुंजड़ी। 'प्रजाराम' उपन्यास के एम.पी. खुमान अपनी धर्म बेटी मनोरमा का देह शोषण करते हैं। वैसे तो मिस मनोरमा एक मामूली ग्रामीण अध्यापिका से राजनीति में उतरती है और अपने कमसीन सुंदर शरीर के बलबूते पर न सिर्फ ट्रांसफर करवाती है बल्कि प्रधान बनकर एम.पी. साहब के साथ नाजायज संबंध कायम करती है। वह उनकी गोद में सोकर कहती है कि "आप बहुत ही घिनौने आदमी है। आपने मुझे बेटी कहा। यही मनोरमा वर्तमान राजनीति के सभी जोड़तोड़ों को अपनाकर अपनी गोरी देह को बड़ी सतर्कता से राजनीति में चलाती है और देह का यह भूखा देश उसके सामने परास्त हो जाता है।"[11] वह एम.एल.ए. बन जाती है। प्रजाराम इन्हीं मनोरमा जैसे चाटुकारों को अपना सर्वस्व देकर राजनीति करने वाले पर व्यंग्य करता हुआ कहता है कि "मनोरमा जी, यदि इस देश में लोकतांत्रिक समाजवाद की जगह लोकतांत्रिक चमचावाद का नारा प्रचारित–प्रसारित किया जाता तो ज्यादा उत्तम रहता।"[12] इस प्रकार राजनीतिक दृष्टि से चन्द्र' नारी की वास्तविक स्थिति को प्रकट करने में सफल रहे हैं।

नारी का सामंती जीवन

स्त्री को भारतीय दर्शन में ईश्वर की सुंदरतम रचना माना गया है। उसे जननी, गृहलक्ष्मी, माँ, देवी, अर्धांगिनी जैसे अनेक विशेषणों से सुशोभित किया है। स्त्री और पुरुष प्रकृति के विकास में महत्त्वपूर्ण रहे हैं। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक नारी की स्थिति में परिवर्तन दिखाई देता है। आधुनिक काल में अंग्रेजों की व्यक्तिवादी संस्कृति, नारी संबंधी विशाल दृष्टिकोण, शिक्षा के प्रति आस्था, आस्था का पर्याप्त प्रभाव समाज सुधारकों पर पड़ा। नारी अधिकार की बातों का समर्थन किया। इसी संबंध में कानून भी बनाए। धीरे–धीरे नारी के जीवन में परिवर्तन हो रहा है। लेकिन सामंती परिवेश में जमींदार आज भी इनके अज्ञान और मजबूरी का लाभ उठाकर मजदूरनियों, निम्न जातियों तथा मजबूर नारियों को भोग्या समझकर, डरा–धमकाकर, उन पर मनमाना अन्याय–अत्याचार करते हैं। उनकी इज्जत लूटते हैं, पीटाई करते है इतना ही नहीं तो उनकी हत्याएँ भी की जाती हैं। दिन दहाड़े चलने वाले इन अत्याचारों के खिलाफ कोई चूं तक नहीं करता। "सच तो यह है कि सामंती राज्य की नारी एक वेश्या है, घर की बेजान चीजों की स्वामिनी, जीवंत मनुष्यों की दासी। वह आर्थिक, परंतत्रता की कड़ियों में जकड़ी हुई है। वह क्या जीवन है? जब अपना कोई अस्तित्व ही ना रहे, दूसरों के आश्रय में सांस लेना पड़े यह जीवित रहना मात्र है।"[13] सामंती परिवेश में आज भी नारी की स्थिति में परिवर्तन हो रहा है लेकिन अंदर–अंदर अन्याय और अत्याचार से वह ग्रस्त है। यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' ने उपन्यासों में प्राचीनकाल से आधुनिक काल की नारी की स्थिति को सामंती परिवेश में चित्रित किया है।

पति–पत्नी के सहयोग, प्रेमभाव तथा योगदान से परिवार समृद्ध और संपन्न बनता है। नारी अपने बीमार पति को बचाने के लिए अपना दूध तक बेचती है। 'गुलाबड़ी' उपन्यास में नायिका गुलाबड़ी कहती है कि "तू समझता क्यों नहीं गीगले के बापू! मैं तुझे बचाने के लिए ही यह सब कर रही हूँ। जरा सोच, बेटा मर भी जाएगा तो फिर हो जाएगा, क्योंकि उसका जनक तू है। यदि तू नहीं रहेगा तो मेरा सब–कुछ समाप्त हो जाएगा। तू तो जानता ही है कि धणी के पीछे ही लुगाई के सारे सुख हैं।"[14] 'मोहभंग' उपन्यास की चरित्र लेखिका पद्मा कहती है कि "जहां तक मेरा अपना विचार है पुरुष को इस देश में स्त्री की सबसे ज्यादा जरूरत तो रात के लिए होती है,

फिर घर–गृहस्थी, बच्चे और अन्य व्यवस्थाओं के लिए। मित्र के रूप में नारी ने अभी हमारे समाज में स्थान नहीं पाया है। दो–चार प्रतिशत पाया भी है तो वह कोई महत्त्व नहीं रखता।"[15] सामंती वर्ग में नारी को भोग्या के रूप में समझकर उसे अपनी हवस का शिकार बनाते हैं। ठाकुर लोग नारी की गरीबी और मजबूरी का लाभ उठाते थे। 'ठकुरानी' उपन्यास में नैना अपने भूखे बच्चे की रोटी के लिए ठाकुर के पास जाती है – "वह ठाकुर के द्वार गई। ठाकुर ने उसे कमरे में बुलाया और उसके सतीत्व के बदले उसे झोली भर के धान दे दिया।"[16] सामंती समाज में विवाह यौन इच्छाओं की पूर्ति का प्रमुख साधन था। राजा और सामंत लोग यौन इच्छाओं की पूर्ति के लिए कई–कई विवाह करते थे। 'रानिवास की रूपसी' उपन्यास के राजा हुलास की कई रानियाँ और परदायतनें थीं। "हुलासगढ़ में कई हिस्से थे। उसकी जनानी ड्योढी का हिस्सा अलग था। उसमें तीस महल थे। तीसों महलों के नीचे छोटे–छोटे कक्ष थे, इसमें हुलास की पर्दायतनें, मरजीदानें, रखैल और घाघरेवालियाँ रहती थी। ड़ावड़ियों के लिये किले की चार दीवारी के पास दड़बों की तरह छोटी–छोटी कोठरियाँ बनी हुई थी।"[17] 'ढोलन कुंजकली' उपन्यास के राजा की भी कई रानियाँ थीं और उसकी जनानी ड्योढी में भी रानी के अलावा भी कई स्त्रियाँ थीं। 'चन्द्र' के शब्दों में "राजाजी बड़े भोगी हैं। ऐसा भोगी तो त्रिलोक में नहीं मिलेगा। अपनी तीन सालियों से भी विवाह कर लिया, क्योंकि वे फूटरी थी और डावड़ियाँ, पासवाने, घाघरेवालियाँ, रानियाँ अलग। फिर भी ऊपर ही ऊपर आते जाते दूसरे शिकार।"[18] सामंती युग में विधवा का पुनर्विवाह निषेध था। विधवा को अपशकुनी भी माना जाता था। 'खून का टीका' उपन्यास में जब राणा हम्मीर मालदेव की विधवा पुत्री से विवाह को तैयार हो जाता है तब हम्मीर के सामंत इस पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। उस समय सती प्रथा अपने चरम पर थी। जब राजपूत राजा किसी युद्ध में काम आजाते थे तो उनकी रानियाँ उसकी चिता के साथ जिंदा जल जाती थी।

इस प्रकार सामंती युग में नारी केवल भोग्या बनकर रह चुकी थी। वह पुरुषों के हाथों का खिलौना थी। उसकी अहमियत कामवासना की पूर्ति करने वाली पुरुष वर्ग के पैर की जूती से अधिक नहीं होती थी। निम्नवर्ग की औरतों का शोषण करना सामंती व्यवस्था में लिप्त वर्ग का अधिकार समझा जाता था।

नारी का दांपत्य जीवन

चन्द्र के उपन्यासों में नारी के दांपत्य जीवन को अत्यंत बारीकी से चित्रित किया हुआ परिलक्षित होता है। दांपत्य संबंध मुख्य रूप से पति–पत्नी की समझ बूझ संतुष्टि तथा अपारिवारिक स्थितियों पर निर्भर रहता है। शर्मा चन्द्र' ने पति–पत्नी के बीच मधुर एवं अमधुर दोनों प्रकार के दांपत्य संबंधों की चर्चा की है। संबंधों की मधुरता, पति–पत्नी का एक–दूसरे के प्रति एकनिष्ठ सहयोग, अपनत्व एवं समर्पण से उत्पन्न होती है। कभी पति–पत्नी के बीच किसी कारणवश तालमेल नहीं हो पाता तो उनके संबंध अमधुर होने लगते हैं। तालमेल का अभाव कई प्रकार से हो सकता है।

'सूखा मरूस्थल' उपन्यास में पंडित कालीदास और राधारानी का दांपत्य जीवन एक आदर्श प्रस्तुत करता है। दोनों में आपसी सामंजस्य, परस्पर आदर एवं एक–दूसरे के अंतर्मन की बात पहचान लेने की सूझ होने के कारण मुश्किल परिस्थितियों में भी वैचारिक संघर्ष नहीं होता। जब भी कोई ऐसी बात होती है तब राधारानी एक आदर्श पत्नी बनकर उसे संभाल लेती है।[19] इसी प्रकार 'गुलाबड़ी' उपन्यास में गोपला और गुलाबड़ी का दांपत्य जीवन भी आदर्श प्रस्तुत करता है।[20] ऐसा ही एक दूसरा उपन्यास है 'एक और श्रीगणेश' में मनिषा और विनायक का दांपत्य जीवन भी आदर्श प्रस्तुत करता है। वे दोनों छोटे–छोटे गांवों में जाकर ज्ञान की ज्योति जगाते थे। उन गरीब किसान, आदिवासी और मजदूरों को जगाते थे, जो सदियों से हर दृष्टि से शोषित रहे हैं। अंत तक वे दोनों सच्चाई और मनुष्यता के लिए लड़ते रहे।[21] इस प्रकार दोनों क्रांतिकारी हैं जिन्होंने आखिरी दम तक सच्चाई और मनुष्यता के लिए अपना सारा जीवन न्योछावर कर दिया था।

'चन्द्र' के उपन्यासों में मधुर संबंधों वाले दंपतियों का चित्रण किया है। यहाँ पर पति–पत्नी एक–दूसरे पर हावी होने की चेष्टा नहीं करते। दोनों मिलकर सोच–विचार कर निर्णय करते हैं। 'शतरूपा' उपन्यास के क्रांती और बन्नो ऐसे पति–पत्नी हैं जिनका एक–दूसरे से मधुर संबंध है। जब बन्नो और उसकी सहेली शतरूपा आपस में गप्पे मार रहे थे तब बन्नो का पति दोनों के लिए चाय बनाकर लाता है और कहता है कि "लीजिए, चाय पीजिए।"[22] भारतीय नारी किसी भी हालत में अपने गृहस्थि जीवन को टूटने नहीं देती। 'यातना घर' उपन्यास में थानेदार हजारी साहब सारा दिन रिश्वत के पैसे जोड़ने में इतने व्यस्त रहते हैं मानो पैसे कमाने की मशीन हो। उसे अपनी पत्नी, लड़का तथा अपनी माँ से कोई लगाव नहीं। एक बार उसकी पत्नी कहती है कि "आप किसी जंत्र–मंत्र वाले से उस राजा की तरह कोई ऐसा चमत्कार क्यों नहीं सीखते जिससे आप जिस वस्तु को छुएं, वह सोने की हो जाय।... बुरा न मानिएगा, आप एक थानेदार हैं और थानेदार की कोई ऐसी तनख्वाह नहीं होती कि वह प्लॉट खरीद लें, अपने बेचे हुए खेत खरीद ले और आराम से रहे।"[23]

आधुनिक नारी जब यह देखती है कि पति का बर्ताव ठीक नहीं है तो वह विद्रोहिणी बन जाती है। वह अपने पति के अत्याचारों को भी सहन नहीं कर सकती। 'दर्द का दायरा' उपन्यास की सीता ऐसी ही नारी है। 'गुरू गरिमा' में गोविंद की पत्नी लालकी की जिंदगी भी तनावपूर्ण है। वह गोविंद की मनमानियों को नजरअंदाज नहीं कर पाती। परिणामस्वरूप वह पति से बार–बार झगड़ा करती है। इसीलिए उसका जीवन संघर्षपूर्ण और दुखपूर्ण हो चुका है। वह अपने पति से कहती भी है, "हड्डी–पसली क्यों नहीं एक करेंगे, मैं आपकी दासी हूँ

न।"[24] इसी प्रकार इसी उपन्यास की कंदीया की पत्नी जीवनी का जीवन भी दुखपूर्ण है। इस संदर्भ में प्रो. अर्जुन जानू घरत का कहना है कि "पति–पत्नी का यह रिश्ता रथ के दो पहियों की तरह होता है। जीवन में पति–पत्नी के बीच सामंजस्यपूर्ण वातावरण नहीं है तो परिवार की स्थिति और दोनों का वैवाहिक जीवन अच्छा नहीं रहता।"[25] इस प्रकार चन्द्र के उपन्यासों में कटु एवं मधुर दोनों प्रकार के दांपत्य जीवन का चित्रण हुआ है।

नारी का धार्मिक जीवन

चन्द्र के उपन्यासों में नारी की धार्मिकता में व्रत उपवास को भी विशेष स्थान रहा है। देवी–देवताओं एवं ईश्वरीय आस्था का एक आंतरिक उत्स है– व्रत–उपवास। अपनी मनौतियाँ पूर्ण करने हेतु लोग अपनी अभीष्ट की अभ्यर्थना करते हैं। संतान रहित संतान की, गरीब धन की तथा इन दोनों से भरपूर व्यक्ति यश लाभ की कामना करता है। विभिन्न देवी–देवताओं में आस्था रखने वाले अपने–अपने मन में एक संकल्प निर्धारित कर लेते हैं और उसकी पूर्ति हेतु विशिष्ट देवताओं से निवेदन करते हैं। 'सती–महासती' उपन्यास की ठकुराणियाँ, दरोगिनें और डावड़ियों ने अपने पति की लंबी उम्र के लिए गणेश व्रत रखा था। साथ में देवड़ी मनहर कंवर और दूसरी ठकुरानियाँ करवा चौथ का व्रत भी कर लेती है। इसी उपन्यास की देवड़ी मनहर कंवर पुत्र प्राप्ति के लिए 'आसमाता' व्रत कर लेती है। इर तरह नारी अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करने हेतु अनेक प्रकार के व्रत उपवास कर लेती है।

कोई भी व्यक्ति जब मंदिर के सामने से गुजरता है तो वह शीश जरूर नवाता है। जब मास्टरजी और झींटिया शहर जाने के लिए उद्यत होते हैं तब हरखा उनसे कहती है, "भैरूनाथ बाबा के दर्शन कर लो, उनकी आशीष से मन के सारे मनोरथ पूर्ण होंगे।"[26] इससे हमें भारतीय मानस में ईश्वर के प्रति गहरे विश्वास का पता चलता है। यहाँ पर यह धारणा प्रचलित है कि जो कुछ हम जीवन में पाते हैं, वह सब हमें ईश्वर देता है। जब–जब गुलाबड़ी भैरू मंदिर के सामने से गुजरती है तब हाथ जोड़कर प्रार्थना जरूर करती है। 'चन्द्र' के शब्दों में ''बीच में भैरूजी का मंदिर। गुलाबड़ी जब–जब इस मंदिर के सामने से गुजरती है, एक पल रुकती है, पगरखी खोलती है। हाथ जोड़कर भैरू जी को धोक देती है। प्रार्थना करती है, हे भैंरू बाबा, मुझे अन्न, धान, संतोष देना।''[27] 'ढोलन कुंजकली' उपन्यास का हीरू जब शराब छोड़कर रास्ते पर आ जाता है तो उसकी पत्नी उसे रामदेव बाबा की कृपा ही समझती है। जब हीरू ने रूपाली से क्षमा माँगी तो वह आँसू बहाने लगी। तब हीरू उसके आँसू पोंछते हुए बोला, "मत रो... बावली। रामदेव बाबा की कृपा से सब ठीक होगा। सुख शांति हो जायेगी।"[28] तब रूपाली बोली, "कुंजड़ी के ब्याव के बाद रामदेव बाबा के सवा पाँच सेर का गुड़ का चूरमा करूँगी।"[29] 'जीवनयुद्ध' उपन्यास की महुआ की भी भूतनाथ बाबा के प्रति गहरी आस्था है। इसलिए वह उसके सपने में भी आता है। महुआ बाबला से कहती है, "मैं तुम्हारे सामने झूठ नहीं बोलूंगी। ... मैं तुम्हारी सौगंध खाकर कहती हूँ कि मुझे सपने में भगवान भूतनाथ ने स्पष्ट रूप से कहा है कि महुआ! जब तक तुम्हारे संतान न हो तब तक तू मेरा यह स्थान मत छोड़ना ... मैं अब यह स्थान नहीं छोडूंगी। मुझे माँ बनने का अवसर ही भूतनाथ ने दिया है। काली माई की असीम कृपा का यह प्रसाद है।"[30] महुआ का यह प्रबल विश्वास अंत तक बना रहता है और बच्चा होने के बाद महुआ भूतनाथ बाबा को ही प्रणाम करती हुई कहती है, "हमारी रक्षा करना बाबा, हम यह स्थान छोड़ रहे हैं पर तुम्हें नहीं।"[31] 'पराजिता' उपन्यास में भी सेठानी को शादी के बाद भी बचपन के प्रेमी कानू के साथ सहवास के स्वप्न आते थे। वह इस स्वप्न से बार–बार विचलित हो जाती थी। वह अपने आराध्य श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती है कि "हे प्रभु! मैं अधिक से अधिक तुम्हारा चिंतन करती हूँ। मैंने अपने मन से दुष्भाव निकाल दिए। मैं अपनी आत्मा से प्रयास करती हूँ कि मेरा अर्पण तुममय हो पर प्रभु मुझे कानू के पापमय सपने क्यों आते हैं? अपनी अनंत कृपा से मुझे पाप से मुक्त करो। यदि अब मुझे ऐसा कोई सपना आया तो हे श्यामसुंदर, मैं इस जीवन लीला का अंत कर दूंगी।"[32] 'गुलाबड़ी' उपन्यास में जब बहुरूपिया अमोलक की माँ अंतिम साँसे गिन रही थी तब वह अमोलक से कहती है, "बेटा! मन नहीं मानता। अब तो बोरिया बिस्तर बाँधने का समय आ गया है। ... मेरे मुँह में तुलसी और गंगा जल लाकर डाल दो। इससे मेरे पाप खत्म हो जायेंगे और मैं मोक्ष प्राप्त कर लूँगी। बेटा! बार–बार जन्म नहीं लेना चाहती।... एक जन्म के दुःख भी मुझसे नहीं सहे गये।''[33] इस प्रकार 'चन्द्र' ने अपने उपन्यासों में धार्मिक विश्वास को अपने उपन्यास में चित्रित किया है। 'पराजिता' की भगीरथी श्रीकृष्ण के प्रति, 'गुलाबड़ी' उपन्यास की गुलाबड़ी भैरूबाबा के प्रति, 'हजार घोडों का सवार' का मेघू रामदेव बाबा के प्रति गहरी आस्था रखते हैं। इसी आस्था के सहारे वे जीवन के महानतम दुःखद क्षणों को झेल जाते हैं। यह स्थिति 'चन्द्र' के पात्रों की नहीं है बल्कि समुचे भारत वर्ष की है। अतः भारतीय समाज की इस धार्मिक जीवन को चित्रित करने में ये पूर्णतः सफल रहे हैं।

नारी का आर्थिक जीवन

संसार की समस्त विषमताओं की जड अर्थ' है। आज की अर्थप्रधान व्यवस्था में आर्थिक समस्या ही प्रधान समस्या है। इस 'अर्थ' ने ही समस्त मानवीय मूल्यों को लील दिया। अर्थ के सम्मुख समस्त मानवीय रिश्ते रूखे हो गये हैं। जीवन का आधार ही 'अर्थ' बनता जा रहा है। आर्थिक अभाव के कारण अनेक लोग यातनाएँ सहने पर मजबूर हो जाते हैं। नारी समाज की स्थिति तो और भी भयंकर है। देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनियमितताओं तथा षड्यंत्रों का जनक यह अर्थ ही है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति धनोपार्जन चाहता है और कम श्रम से अधिक लाभ की आकांक्षा रखता है। इस अर्थ ने ही मानव–मानव के

मध्य विषमता की खाई को बढ़ाया है। यही कारण है कि मानवीय मूल्य शिथिल हो गये हैं तथा अर्थयुक्त रिश्ते बनते जा रहे हैं।

चन्द्र के उपन्यासों में नारी के आर्थिक जीवन का चित्रण भी दृष्टिगोचर होता है। 'गुलाबड़ी' उपन्यास में चन्द्र' अर्थाभाव की स्थिति का बड़ा ही मार्मिक चित्रण करते हैं। गुलाबड़ी पति की दवाइयों के लिए अपने आँचल का दूध बेचती है। लेकिन उसका पति इस बात के लिए राजी नहीं था। तब गुलाबड़ी अपने पति को राजी करने के लिए कहती है, "तू समझता क्यों नहीं? यदि मैंने ऐसा नहीं किया तो हम सब मर जायेंगे। सुन, गुस्से को थूककर सोच, अब हमारे पास बेचने को रखा ही क्या है? घर की छोटी मोटी चीजें तो पहले ही बिक चुकी हैं। बचा है तो केवल मेरे आँचल का दूध। बुरे समय में कुछ भी करना न पाप कहलाता है और न अधर्म।"[34] इसी उपन्यास की गुलाबड़ी की नानी सास बीमार है। पर गुलाबड़ी उसे देखने भी नहीं जाती, क्योंकि पहले रोटी का इंतजाम करना है। जब गंगा माँसी गुलाबड़ी को यह बताती है कि तेरी नानी सास बीमार है, तू उसे देखने चली जा। तब गुलाबड़ी कहती है, "सुन माँसी। मरने के लिए गाड़ियाँ तो नहीं जूतती। मौत जिस पल आनी है, वह आयेगी ही। लेकिन इस पेट की लाय भी तो बुझानी पड़ती है। सेठ गौड़हरि ने यहाँ से दो कोस पर प्याऊ खोली है। उसके लिए बीस मटकियाँ और दो माटे देने हैं। यह काम होते ही मैं नानी सासरे चली जाऊँगी।"[35]

'एक कमरे की आत्मकथा' की रूपा अपनी घर की जरूरतों को पूरा करने के लिए वह बसंत की रखैल बनती है। तथा इसी उपन्यास की रमा जीवन को सुखी और समृद्ध बनाने के लिए सोसायटी गर्ल बन जाती है। साथ में 'गुनाहों की देवी' उपन्यास की दुर्गा, वीणा, बेला, रानी, सपना, नीलम आदिनारियाँ पैसों के लिए वेश्या व्यवसाय अपनाती हैं। घरेलू नौकरानियों के रूप में गुलाबड़ी' उपन्यास की गुलाबड़ी, हंसा, 'पराजिता' उपन्यास की कंवली, ठकुराणी' उपन्यास की नैना, 'राजा रसीलासिंह' उपन्यास की रंभा आदि काम करती हैं। आर्थिक समस्याओं को विशेष रूप से महिलाओं को ही झेलना पड़ता है। घर की गरीबी, पैसे की तंगी आदि से नारी को लड़ना पड़ता है। 'जनानी ड्योढी' की नैनरस की बुआ धन के लालच में नैनरस को बेच देती है। उसी प्रकार 'गुनाहों की देवी' उपन्यास की गवरा को भी उसकी दादी ने तीर्थयात्रा करने के लिए तीन हजार रूपये में बेच दिया था। 'दुःख अपने–अपने' उपन्यास की मोना टाइपिस्ट की नौकरी करके अर्थार्जन करती है। 'अपना अतीत' उपन्यास की मीनल घर का खर्चा चलाने के लिए जीवन केमिकल्स' में काम करती है, तो मोहभंग' की दिव्या अपने घर की जीविकोपार्जन के लिए वह पी.ए. का काम करती है। ये सब नारियाँ अर्थार्जन तो करती ही हैं लेकिन सभी अभावग्रस्त जिंदगीयाँ गुजारती हैं। ये सब विवशतावश नौकरी करती हैं।

'दर्द का दायरा' उपन्यास की वासुकी का विवाह तीन हजार रूपयों के लिए उसके पिता पचास साल के बूढ़े के साथ करता है। 'ठकुराणी' उपन्यास का ठाकुर भी अपनी प्रतिष्ठा, इज्जत बढ़ाने के लिए अपनी लड़की केसर का विवाह अपने से बड़े ठाकुर के बेटे अनुपसिंह, जो लकवे का मरीज था, उससे शादी करते हैं। इस प्रकार अर्थ के कारण ही ऐसे अनमेल विवाह हो जाते थे। आज मनुष्य की नियति केवल पैसा कमाना बनती जा रही है। यही कारण है कि मनुष्य अपने समाज के परिवेश से कटता जा रहा है। 'चन्द्र' जी धन के पीछे भागना उचित नहीं मानते। 'पराजिता' उपन्यास में वे रेखांकित करते हैं कि "राजस्थानी समाज की नियति केवल पैसा कमाना बनती जा रही है जो उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक व साहित्यिक स्थितियों से काटती जा रही है ...। वस्तुतः भौतिक सुखों को जीना 'तन' का जीना है और 'मन' तो उस स्थिति में मुर्दा ही रहता है।"[36] 'चन्द्र' धन के पीछे भागने को दुर्भाग्यपूर्ण मानते हैं। यद्यपि वे यह नहीं कहते कि धन कमाओ ही नहीं, अपितु उनका कहना है कि आवश्यक धन के लिए शारीरिक एवं मानसिक सुखों का परित्याग मत करो। क्योंकि जब जीवन में शारीरिक व मानसिक सुख नहीं मिलेंगे तो इस धन का क्या महत्त्व? यह धन व्यर्थ है।

अतः नारी की आर्थिक जिंदगी अभावग्रस्त और दयनीय है। स्त्री की आर्थिक विपन्नता के कारण ही पुरुष उसका शोषण करता रहा है। सीमित आय के साधन उसकी दयनीय जिंदगी का मुख्य कारण है। स्पष्ट है कि चन्द्र के उपन्यासों में नारी के आर्थिक जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है।

निष्कर्ष

यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यासों में नारी जीवन के अध्ययन के उपरांत नारी जीवन विषयक विविध तथ्य सामने आते हैं। नारी के पति–पत्नी के संबंधों में ठंडापन दिखायी देता है। क्योंकि उनके संबंध दैहिक या शारीरिक धरातल पर ही आधारित मिलते हैं। इन संबंधों में जो समर्पण, अपनापन और मधुरता होनी चाहिए उसका इसमें अभाव है। साथ में चन्द्र के उपन्यासों की नारी अत्यधिक धार्मिक भी दिखायी देती है। उसका आर्थिक जीवन समस्याओं से ग्रस्त दिखायी देता है। नौकरी के क्षेत्र में भी नारी का जीवन घुटनभरा ही है। उसे नौकरी करते समय बहुत से कठिन प्रसंगों का सामना करना पड़ता है। परंपरागतवादी विचारों के कारण नारी जितना चाहे उतना विकास नहीं कर पाती। परंतु विकास की ओर प्रगतिशील रहती है। पढ़ीलिखी नारी इस प्रकार के विचारों में फँसना नहीं चाहती। उच्चशिक्षित नारी प्रगतिवादी विचारों को लेकर आयी है। परंतु कुछ शिक्षित नारियाँ ऐसी भी हैं कि जो चाहते हुए भी समाज के डर के कारण प्रगतिवादी विचारों को नहीं अपनाती और पति के अन्याय अत्याचार को सहती रहती है। चन्द्र के उपन्यासों में नारी की जिंदगी घुटनभरी परिलक्षित होती है। परंतु अन्याय–अत्याचार को सहने के बाद वह कहीं–कहीं विद्रोही बन जाती है। ज्यादा–से–ज्यादा नारी अपने पारिवारिक जीवन को समेटना चाहती है परंतु अनेक ज्यादतियों के बाद वह विद्रोही बन जाती है। अकेलेपन के कारण नारी का जीवन कमजोर बन गया है।

घर में सब होते हुए भी नारी अकेलेपन में जीती है। नारी के अकेलेपन के लिए बहुत से कारण हैं, इनका भी जिक्र इसके अंतर्गत किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ. वल्लभदास तिवारी – हिन्दी काव्य में नारी, पृष्ठ – 55*
2. *डॉ. विक्रमसिंह राठोड – राजस्थान संस्कृति में नारी, पृष्ठ – 100*
3. *डॉ. रेवा कुलकर्णी – हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी, पृष्ठ – 7*
4. *प्रा. अर्जुन घरत – नागार्जुन के नारी पात्र, पृष्ठ – 144*
5. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – दर्द का दायरा, पृष्ठ – 47*
6. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – दुख अपने–अपने, पृष्ठ – 96*
7. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – जीवनयुद्ध, पृष्ठ – 65*
8. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – दीया जला : दीया बुझा, पृष्ठ – 25*
9. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – खून का टीका, पृष्ठ – 136*
10. *यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' – रनिवास की रूपसी, पृष्ठ – 38*
11. *यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' – प्रजाराम, पृष्ठ – 58*
12. *वही, पृष्ठ – 60*
13. *सुरेश सिन्हा, हिंदी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना, 1973, पृ.8.*
14. *यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र', गुलाबड़ी, पृ.29–30*
15. *यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र', मोह–भंग, पृ.108.*
16. *यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र', ठकुराणी, पृ.67.*
17. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – रनिवास की रूपसी, पृष्ठ – 31*
18. *यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' – ढोलन कुंजकली, पृष्ठ – 85*
19. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – सूखा मरूस्थल, पृष्ठ – 54*
20. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – गुलाबड़ी, पृष्ठ – 29–30*
21. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – एक और श्रीगणेष, पृष्ठ – 85*
22. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – शतरूपा, पृष्ठ – 91*
23. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – यातना–घर, पृष्ठ – 22*
24. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – गुरू–गरिमा, पृष्ठ – 68*
25. *प्रा. अर्जुन घरत – नागार्जुन के नारी पात्र, पृष्ठ – 35*
26. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – मिट्टी का कलंक, पृष्ठ – 94*
27. *यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' – गुलाबड़ी, पृष्ठ – 12*
28. *यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' – ढोलन कुंजकली, पृष्ठ – 46*
29. *वही, पृष्ठ – 47*
30. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – जीवनयुद्ध, पृष्ठ – 157*
31. *वही, पृष्ठ – 208*
32. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – पराजिता, पृष्ठ – 141*
33. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – बहुरूपिया, पृष्ठ – 14*
34. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – गुलाबड़ी, पृष्ठ – 26*
35. *वही, पृष्ठ – 10*
36. *यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र' – पराजिता, इतना ही कहूँगा।*